अमृता

तृतीयो भागः

अष्टम-वर्गस्य कृते

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत पाठ्य पुस्तकों का निःशुल्क वितरण ।
क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सर्व शिक्षा अभियान : 2013-14 – 15,38,461

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स, कुन-कुन सिंह लेन, पटना-6 द्वारा एच०पी०सी० के 70 जी०एस०एम० क्रीम वोभ टेक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) तथा एच०पी०सी० के 130 जी०एस०एम० ह्वाईट (वाटर मार्क) आवरण पेपर पर कुल 7,78,014 प्रतियाँ 24 X18 सेमी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया। इस क्रम में शैक्षिक सत्र 2010–11 के लिए वर्ग I,III, VI एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पाठ्य–पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की गयीं। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I,III,VI एवं X की सभी अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गयीं। इस सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011–12 के लिए वर्ग II,IV एवं VII तथा शैक्षिक सत्र 2012–13 के लिए वर्ग V एवं VIII की नई पाठ्य–पुस्तकें बिहार राज्य के छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ–ही–साथ वर्ग–I से VIII तक की पुस्तकों का नया परिमार्जित रूप भी शैक्षिक सत्र 2013–14 के लिए एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार, पटना के सौजन्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री पी0के0 शाही एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली तथा एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार, पटना के निदेशक के भी हम आभारी हैं जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

t0d0ih0 flg] भा0रे0का0से0
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य–पुस्तक प्रकाशन निगम लि0

दिशा बोध सह पाठ्य-पुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राहुल सिंह**
  राज्य परियोजना निदेशक
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

- **श्री राम शरणागत सिंह**
  संयुक्त निदेशक,
  शिक्षा विभाग, बिहार एवं विशेष कार्य
  पदाधिकारी, बी.एस.टी.बी.पी.सी., पटना

- **श्री अमित कुमार**
  सहायक निदेशक, प्राथमिक शिक्षा निदेशालय
  बिहार सरकार

- **डॉ. श्वेता सांडिल्य**
  शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना

- **श्री हसन वारिस**
  निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
  परिषद्, बिहार, पटना

- **श्री मधुसूदन पासवान**
  कार्यक्रम पदाधिकारी
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

- **डॉ. एस.ए. मुईन**
  विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
  परिषद्, बिहार, पटना

- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**
  प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन
  एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर

- **डॉ. उदय कुमार उज्ज्वल**
  अपर कार्यक्रम पदाधिकारी
  बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

विषय विशेषज्ञ – **प्रो. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'**
पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

लेखक समूह –

1. **डॉ. मधु बाला सिन्हा**
   व्याख्याता, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
2. **डॉ. सीताराम झा**
   सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय, हाबीभौआर, बेनीपुर, दरभंगा
3. **शाहिद आलम**
   सहायक शिक्षक, उच्च माध्यमिक विद्यालय, हड़सर धनौती, सिवान
4. **(श्री) शंभू राय**
   सहायक शिक्षक, राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलजारबाग
   पटना सिटी, पटना-7
5. **(श्रीमती) प्रियंका**
   सहायक शिक्षिका, अनुग्रह नारायण सर्वोदय उच्च विद्यालय, उसफा, पटना

संस्कृत पाठ्य-पुस्तक समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

1. **डॉ. रामगुलाम मिश्र**
   अध्यक्ष, संस्कृत विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना
2. **डॉ. अशोक कुमार**
   प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
   पटना विश्वविद्यालय, पटना

समन्वयक – **डॉ. अर्चना**
व्याख्याता,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार, पटना

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
व्याख्याता,
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार, पटना

आभार – **यूनिसेफ, बिहार**

WEBCOPY, BSTBPC, NOT TO BE PUBLISHED

पुरोवाक्

संस्कृतं भारतवर्षस्य अतीव महत्त्वपूर्णा प्राचीना च भाषा वर्तते । अस्या अध्ययनं विद्यालयेषु विभिन्नैः विषयैः सह परम्परया क्रियते । छात्राणां सामञ्जस्यं संस्कृतादिभिः विषयैः सह विद्यालय-शिक्षाकाले संस्थापितं जायते । क्रमेण 2005 तमे ईस्वीवर्षे राष्ट्रियपाठ्यचर्यायाः रूपरेखा प्रकाशिताऽभूत् यत्र छात्राणां विद्यालयजीवनस्य संयोजनं विद्यालयेतर-जीवनेन भवेदित्यनुशंसितम् । ततः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायां पुस्तकीयं ज्ञानमेव मुख्यमासीत्, यत्र विद्यालयस्य परिवारस्य समाजस्य च मध्येऽन्तरालं पोषितम् । राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यपुस्तकानि सम्प्रति मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते । संस्कृतविषयस्य अनुशीलने बिहारराज्येऽपि तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि भवेयुः इत्यस्माकं संकल्पः । अस्माकमयमभिनवः प्रयासः 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रियशिक्षानीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रितायाः शिक्षाव्यवस्थाया विकासाय कल्पिष्यते इति वयमाशास्महे ।

एतादृशस्य नूतनस्य प्रयासस्य सफलता तु विद्यालयानां प्राचार्याणां शिक्षकाणां च तथाभूतान् प्रयासानेवालम्बते यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाशीलतायाः विकासाय, प्रश्नाँश्च प्रष्टुं प्रोत्साहयन्ति । इदमत्र स्वीकरणीयं यद् रुचिपूर्णा पाठ्यसामग्री, तदनुशीलनाय स्वतन्त्रता च यदि छात्रेभ्यो दीयते तदा ते वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य स्वयमपि नूतनं ज्ञानं सृजन्ति । परीक्षायाः कार्यक्रमोऽपि व्यापको भवेत्, न तु पाठ्यपुस्तकाश्रितं ज्ञानमात्रम् । बालकेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च उपक्रमः तदैव सम्भवेद् यदा वयं तान् सर्वानपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य केवलस्य ग्राहकरूपेण ।

उपर्युक्तानि लक्ष्याणि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते । दैनिकसमयसारण्यां परिवर्तनशीलता यथा अपेक्षिता, तथैव वार्षिक-कार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परतापि अनिवार्या वर्तते । शिक्षणार्थं नियते काले तदैव वास्तविकं शिक्षणं सम्भवति । नूनं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य स्थितिविशेषस्य च दृष्ट्या प्रस्तुतं पाठ्यपुस्तकं छात्राणां विद्यालयीयजीवने आनन्दानुभूतये प्रभावकं भविष्यति, न तु नीरसतायाः साधनम् । पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्धकालदृष्ट्या च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः । पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, उत्सुकतावृद्धेः, लघुसमूहेषु वार्त्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च प्रभूतमवसरं प्रदास्यति ।

बिहार राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृत-पाठ्यपुस्तक-विकास-समितेः अध्यक्षाय विश्रुतयशसे डॉ. उमाशंकरशर्मणे तत्सहायकेभ्यः प्रतिभागिभ्यश्च भूयोभूयः साधुवादं वितरति, स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति ।

हसन वारिस
निदेशकः (प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्,
बिहार

भूमिका

संसार में अनेक भाषाएँ बोली और लिखी जाती हैं। कुछ भाषाएँ केवल इतिहास में सुरक्षित हैं। उन्हें औपचारिक दृष्टि से मृतभाषा कहते हैं । सौभाग्यवश संस्कृत भाषा संसार की उपलब्ध तथा जीवित भाषाओं में इतिहास की दृष्टि से प्राचीनतम है । इसका साहित्य न्यूनतम चार हजार वर्षों से अनवरत चल रहा है, यद्यपि इसे इस कालावधि में अपनी रक्षा के लिए पर्याप्त संघर्ष करना पड़ा है । संस्कृत ने अपने साहित्य के अन्तर्गत अनेक अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को आत्मसात् करके सर्वांगपूर्ण भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है । इसीलिए इसके विषय में एक प्रशस्ति चल पड़ी है – **संस्कृतिः संस्कृताश्रिता ।** अर्थात् भारतीय संस्कृति प्रत्यक्षतः या परोक्षतः संस्कृत भाषा पर आश्रित है, इसमें समाविष्ट है । भारत की अधिसंख्य भाषाएँ (जैसे- हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, उड़िया, असमिया, मैथिली आदि) इसी से निकली हैं। दक्षिण भारत की चारों प्रमुख भाषाओं (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम) ने भी संस्कृत की शब्द-सम्पदा को व्यापक रूप से स्वीकार किया है । इस प्रकार बहुत प्राचीनकाल से भारतीय स्तर पर संस्कृत लोकप्रिय तथा श्रद्धास्पद रही है । भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र में संस्कृत के विद्वान् कवि तथा लेखक हुए हैं और आज भी अपनी संस्कृत रचनाओं से इस भाषा और साहित्य को सम्पन्न कर रहे हैं । भारतवर्ष की वर्तमान बहुभाषिकता का सर्वोत्तम सेतु संस्कृत भाषा ही है । इस दृष्टि से इस चिर प्राचीन और चिर नवीन भाषा का अध्ययन आवश्यक है ।

भारतीय संस्कृति की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि और प्रसार में संस्कृत भाषा का ज्ञान और अध्ययन वर्तमान शिक्षा पद्धति में भी सभी ने स्वीकार किया है । विद्यालय-स्तर पर संस्कृत शिक्षण के रुचिकर रूप पर बल देते हुए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005 ई.) के आलोक में स्वीकृत पाठ्यक्रम के अनुसार तथा बिहार राज्य की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता के अनुसार **राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् (S.C.E.R.T.), बिहार** द्वारा संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकों के विकास का कार्यक्रम बनाया गया है । इसी कार्यक्रम के अन्तर्गत **भाषा शिक्षा विभाग** द्वारा उच्च प्राथमिक स्तर पर तीन भागों में विकसित होने वाली नवीन पुस्तक-शृंखला **अमृता** का विकास किया गया है । इन भागों में नैतिक एवं शिक्षाप्रद मूल्यों से परिपूर्ण गद्य-पद्य पाठों का समावेश किया गया है ।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

संस्कृत के प्रारंभिक छात्रों के स्वस्थ भाषिक मनोरंजन के लिए इनमें रुचिवर्धक, ज्ञानवर्धक तथा आकर्षक सामग्री का समावेश किया गया है । इस पुस्तक-शृंखला के सभी भाग विद्यालय स्तर के छात्र-छात्राओं में भारतीय संस्कृति की अमर स्रोतस्विनी संस्कृतभाषा के प्रति रुचि तो उत्पन्न करेंगे ही, साथ ही इस भाषा का स्वयं प्रयोग करने की क्षमता भी दे सकेंगे । छात्र क्रमशः संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रति अपेक्षित कुशलता पा सकेंगे, ऐसा विश्वास है ।

इस शृंखला का यह तृतीय पुष्प **अमृता तृतीयो भागः** छात्रों के लिए प्रस्तुत है । इसका द्वितीय भाग इसके पूर्व ही प्रकाशित हो चुका है । इस तृतीय भाग के निर्माण में भी इस तथ्य पर विशेष ध्यान रखा गया है कि कक्षा में शिक्षक तथा छात्र-छात्राओं के बीच अंतः क्रिया प्रश्नोत्तर के माध्यम से हो । यह संस्कृत भाषा में हो तो अधिक अच्छा है क्योंकि छात्रों में संस्कृत के सरल वाक्यों को समझने, बोलने, पढ़ने और लिखने की प्रवृत्ति और कुशलता अधिकाधिक होती जायेगी । यह उनके भावी जीवन के लिए भी उपयोगी होगी ।

विद्यालय स्तर पर यह संस्कृत की तृतीय पाठ्यपुस्तक है । अतः इसमें भी यथासाध्य चित्रों के आधार पर संस्कृत के सम्बद्ध पाठों को प्रस्तुत करने का प्रयास रहा है । पाठ सरल किन्तु स्तरीय हैं । कई पाठों में दैनिक उपयोग के विषयों का समावेश किया गया है । पाठों के निर्माण में नवीन शिक्षाशास्त्रियों के परामर्शानुसार निम्नलिखित विषयों की सामग्री का यथासाध्य समावेश किया गया है - **मनोरंजन** (जैसे- 'प्रहेलिकाः' में), **खेल** (जैसे-'प्रहेलिकाः' में), **विज्ञान** ('विज्ञानस्य उपकरणानि में), **गणित** ('विज्ञानस्य उपकरणानि' के योग्यता-विस्तार में), **लिंग - समानता** ('गुरु-शिष्य-संवादः' में), **पर्व-त्योहार** ('रविषष्ठी-व्रतोत्सवः' में), **विशिष्ट व्यक्तित्व** ('संकल्पवीरः दशरथ माँझी' में), **देशभक्ति** ('अस्माकं देशः' में), **सामाजिक समरसता** ('मङ्गलम्' 'अस्माकं देशः', 'संघे शक्तिः' इत्यादि में), **स्थानीय परिवेश** ('संकल्पवीरः दशरथ माँझी' में), **सांस्कृतिक धरोहर** ('प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः' में), **स्वास्थ्य** ('गुरु-शिष्य-संवादः' में), **जनसंख्या-नियंत्रण के लाभ** (लघुकथा-'रघुदासस्य लोकबुद्धिः' व इसके योग्यता विस्तार में), **नैतिक आचरण** ('नीति-श्लोकः', 'गुरु-शिष्य-संवादः' आदि में)। इस प्रकार पाठों का परिवेश व्यापक है तथा सामाजिक मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर उन्हें निर्मित किया गया है ।

छात्रों की रुचि समस्त परिवेश को आत्मसात् कर सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है । उनका बौद्धिक विकास हो, मनोरंजन हो, स्वतन्त्र चिंतन की प्रवृत्ति हो तथा सर्जनात्मक क्षमता का भी विकास हो, इसी दृष्टि से पाठों की विषय-वस्तु तथा भाषा-शैली रखी गयी है। प्राय: सभी पाठों का नव विकास किया गया है । केवल 'मङ्गलम्' तथा 'सदाचार:' प्राचीन ग्रन्थों से संकलित हैं । सभी पाठों में छात्रों के आस-पास के परिवेश की ही प्रस्तुति है जिससे कोई भी अंश उद्वेजक (ऊबाऊ) न लगे । कुल मिलाकर इसके चौदह पाठ चौदह रत्नों के समान हैं जो उपयोगी तथा बहुमूल्य भी हैं । इनसे संस्कृत के छात्रों और अध्यापकों को वास्तविक आनन्द की प्राप्ति होगी ऐसा विश्वास है ।

पाठों का परिचय :

यद्यपि प्रत्येक पाठ के आरम्भ में तथा योग्यता-विस्तार के क्रम में पाठों का महत्त्व तथा सामान्य परिचय दिया गया है फिर भी यहाँ उनके विषय में कुछ निवेदन करना प्रासंगिक है ।

1. मङ्गलम् :- मङ्गलाचरण के रूप में इसमें वेद और उपनिषद् के दो मन्त्र संकलित हैं जिनमें समस्त जनता के सहयोग तथा गुरु-शिष्य के परस्पर अभ्युदय की मंगल कामना है । इनका पाठ वैदिक लय और स्वर के साथ किसी भी सभा या कार्यक्रम के आरम्भ में किया जा सकता है ।

2. सङ्घे शक्तिः :- यह एक प्राचीन कथा का पुनराख्यान है । इसमें परिवार में परस्पर विवाद की निन्दा करते हुए मिल-जुलकर रहने का सुझाव व्यावहारिक रूप से दिया गया है। व्यष्टि से अधिक समष्टि महत्त्वपूर्ण है । यह प्राचीन और आधुनिक सिद्धान्त भी है ।

3. अस्माकं देशः :- इस निबन्धात्मक पाठ में भारतवर्ष की प्राचीन सांस्कृतिक महिमा के साथ आधुनिक भारतीय महापुरुषों की उपलब्धियों का संकेत किया गया है ।

4. प्रहेलिकाः :- सभी संस्कृतियों में पहेलियाँ बच्चों के बौद्धिक विस्तार और तर्कशक्ति के विकास के लिए आवश्यक मानी गयी हैं । इस पाठ में संस्कृत पद्यों में पाँच सरल पहेलियाँ दी गयी हैं । इन्हें अपनी क्षमता से समझने का प्रयास छात्र कर सकते हैं ।

5. सामाजिकं कार्यम् :- व्यक्तियों के समुदाय के रूप में समाज का लक्ष्य स्वार्थपरता को हटाकर समाजोपयोगी कार्यों के प्रति एक-एक व्यक्ति को प्रवृत्त करना है । इस विषय पर यह निबन्धात्मक पाठ बच्चों को स्वस्थ सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध कराता है ।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

6. रघुदासस्य लोकबुद्धिः :- इस कथात्मक पाठ में प्रकारान्तर से जनसंख्या-नियन्त्रण पर बल दिया गया है। हरिप्रसाद आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने पर भी अनियन्त्रित परिवार के कारण दु:खी है। दूसरी ओर छोटे परिवार वाला रघुदास आर्थिक दृष्टि से बहुत सम्पन्न न होने पर भी प्रसन्न तथा समृद्ध है।

7. प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः :- इस पाठ में भारतीय प्राचीन सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक धरोहरों के रूप में स्थित तक्षशिला, नालन्दा एवं विक्रमशिला नामक विश्वविद्यालयों के स्वर्णिम युगों का स्मरण किया गया है, जहाँ दूर-दूर से देश-विदेश से छात्र सुयोग्य शिक्षकों से विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त करते थे । इनके अवशेष पुरातत्त्व विभाग द्वारा किये गये उत्खननों से प्राप्त हुए हैं । ये देश के गौरव स्वरूप हैं ।

8. नीति-श्लोकाः :- जीवन को सन्मार्ग पर ले जाने तथा संकट के समय आश्वासन देने वाले नीति-श्लोक संस्कृत में बहुत महत्त्व रखते हैं । विविध नैतिक मूल्यों से सम्बद्ध आठ नीति श्लोक इस पाठ में दिए गए हैं । इनमें सुख-दु:ख की अनिवार्यता, आचार की महत्ता, महापुरुषों की विशिष्टता आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है ।

9. संकल्पवीरः दशरथ माँझी :- इस पाठ में बिहार के एक कर्मठ भूमिहीन किसान दशरथ माँझी का संक्षिप्त जीवन है जिसने पर्वत घाटी को अपने अकेले श्रम से काटकर चौड़ा किया और दो स्थानों की दूरी कम कर दी । भले ही उसे इस कार्य में बाईस (22) वर्ष लग गए, किन्तु वह इतिहास में अमर हो गए ।

10. गुरु-शिष्य-संवादः :- यह पाठ कक्षा में संवाद के रूप में है । यहाँ छात्रों और शिक्षक के बीच वार्तालाप के रूप में विद्या के महत्त्व और जीवन के प्रति किशोरों की स्वस्थ मनोवृत्ति पर प्रकाश डाला गया है । इसका अभिनय भी सम्भव है ।

11. विज्ञानस्य उपकरणानि :- इस निबन्धात्मक पाठ में विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों के आविष्कर्ता तथा उपयोग की चर्चा की गयी है । ये उपकरण पूरे विश्व में जन-जन तक व्याप्त हैं । अत: सामान्य ज्ञान के लिए भी इस पाठ की उपयोगिता है ।

12. सदाचार :- यह पद्यात्मक पाठ संस्कृत के विभिन्न ग्रन्थों से संकलित है । इसमें सत्पुरुषों के योग्य कार्यों का प्रकाशन है । इन कार्यों में बोलने की कला, अभिवादन, व्यक्तित्व के महत्त्व का कारण, प्रात: जागने के लाभ, शिक्षक एवं परिवार के बड़े सदस्य का महत्त्व, सदाचारी की प्रशंसा तथा ईमानदारी पर प्रकाश डाला गया है ।

13. रविषष्ठी-व्रतोत्सव: :- बिहार के त्योहारों में छठ का पर्व संभवत: सबसे बड़ा है । इसमें कठोर संयम, उपवास तथा प्रकृति के सर्वाधिक स्पष्ट देवता सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है । नदियों तथा तालाबों के किनारे अर्घ्यदान तथा व्रत के अनुष्ठान के लिए नर-नारियों का मेला लगता है । इस पर्व का परिचय प्रस्तुत पाठ में दिया गया है।

14. कृषिगीतम् :- यह पाठ नवरचित संस्कृत गीत के रूप में है । किसानों की विपन्नावस्था तथा जीवन के प्रति उनके मोदमय दृष्टिकोण का परिचय इस गीत में दिया गया है । यह विडम्बना है कि पृथ्वी को हरे-भरे परिधान से सम्पन्न करने वाला किसान स्वयं आवश्यक परिधान से वञ्चित रहता है ।

इन पाठों में प्रत्येक के अन्त में शब्दार्थ, अनुप्रयुक्त व्याकरण, मौखिक और लिखित अभ्यास के प्रश्न तथा आवश्यक योग्यता-विस्तार की सामग्री दी गई है । इनसे छात्रों की कक्षा में सक्रियता तथा जागरूकता की अभिवृद्धि होगी । यह इन पाठों की प्रस्तुति का उद्देश्य है । आशा है शिक्षक महोदय पाठ के अंत में आई हुई सामग्री का उपयोग कक्षा में सम्यक् रूप से कराएँगे ।

पुस्तक के अन्त में प्रासंगिक व्याकरण के अन्तर्गत बहुत उपयोगी बातें समझाई गयी हैं । इनमें वर्णविचार, सन्धि, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, समास की अवधारणा, पत्रलेखन तथा अनुच्छेद-लेखन, शब्दरूप-धातुरूप के अतिरिक्त संस्कृत सम्भाषण के अभ्यास के लिए दैनिक व्यवहार में आने वाले सरल वाक्यों का विन्यास किया गया है । इस उपयोगी सामग्री से प्रस्तुत पुस्तक की उपयोगिता अवश्य ही बढ़ी हुई प्रतीत होगी ।

इस पुस्तक-शृंखला के इस तृतीय भाग में भी निम्नांकित बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है -

- संस्कृत शब्दों और वाक्यों का शुद्ध उच्चारण
- प्रश्नोत्तर के माध्यम से शिक्षक-छात्र की अन्त:क्रिया
- भाषिक तत्त्वों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) के प्रयोग की क्षमता
- नैतिक मूल्यों से युक्त संस्कृत पद्यों का परिचय
- संस्कृत की वर्त्तनी को शुद्ध रूप में जानने और लिखने की क्षमता

– प्रत्येक पाठ में शब्दार्थ का परिचय

– प्रत्येक पाठ में अपने आस–पास के परिवेश का परिचय

– पर्यावरण के प्रति जागरूकता

– सामाजिक समरसता

– पाठों के अनुरूप चित्रों का संयोजन

– पुस्तक के परिशिष्ट में व्याकरण की आवश्यक सामग्री ।

शिक्षक की भूमिका

किसी पाठ्यक्रम तथा पुस्तक को कितना भी वैज्ञानिक और रोचक बनाया जाए उसकी महत्ता और उपयोगिता का वास्तविक अंकन शिक्षक ही कर सकते हैं । इसलिए अध्यापन–कार्य में लगे हुए शिक्षक की भूमिका बहुत प्रभावी होती है । एक ओर अध्यापन–कार्य में तकनीकी शैली से युक्त पाठ्यपुस्तकों की अपेक्षा होती है, तो दूसरी ओर पाठ्यपुस्तकों में निहित भाषिक तत्त्वों तथा विषयगत बिन्दुओं के सम्प्रेषण तथा अधिगम में कुशल अध्यापन–शैली भी आवश्यक है । पाठ्यपुस्तक के निर्माण का लक्ष्य तभी पूरा हो सकेगा जब शिक्षकगण अपनी रोचक अध्यापन–शैली से इस पुस्तक की बातों को सम्बद्ध छात्र–छात्राओं तक पहुँचाने में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करेंगे।

बिहार के बहुभाषिक परिवेश में शिक्षक संस्कृत के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं को भी यथासंभव माध्यम बनाते हुए छात्रों में संस्कृत भाषा में दक्षता प्राप्ति के हेतु बनें तथा इस भाषा की ओर छात्रों को क्रमशः अधिक–से–अधिक उन्मुख करें । उनसे अपेक्षा है कि वे छात्रों के मन में यह बात बैठाएँ कि संस्कृत कोई विचित्र और कठिन भाषा नहीं अपितु हमारी भाषाओं की जननी है। इसी के शब्दों को हम परिवर्तित करके बोलते हैं ।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठों के अन्त में आए हुए अभ्यासों तथा उन पाठों के वाक्यों को आधार बनाकर अनुप्रयुक्त (Applied) रूप से करें। इससे व्याकरण भाररूप नहीं लगेगा। वह भाषा की अभिव्यक्ति में सहायक विषय का काम करेगा । कण्ठस्थीकरण

BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास छात्रों में किया जाए । अध्यापक भी नये अभ्यासों की सर्जना करें जिससे छात्रों की अपनी सर्जनाशक्ति का विकास हो तथा उनकी अन्त:वृत्ति संस्कृतमय हो । इससे छात्र अपने परिवेश की अभिव्यक्ति भी संस्कृत में कर सकेंगे ।

संस्कृत भाषा की यह विशिष्टता है कि इसमें प्रयुक्त पद व्याकरण के नियमों से परिपुष्ट होता है, प्रत्येक पद की व्युत्पत्ति होती है, एक-एक पद नए-नए पदों को जन्म देता है जिससे आरंभिक छात्र भी सैकड़ों संस्कृत शब्दों से परिचित हो जाते हैं । शिक्षक यदि चाहें तो शब्दों के पर्याय शब्द, विलोम शब्द तथा उनके प्रयोग भी कक्षा में सिखाएँ। सन्धि के कठिन नियम, समास की जटिलता तथा विभक्तियों के प्रयोग के कठिन नियमों में आरंभिक कक्षा में न जाएँ। तभी संस्कृत भाषा का अध्ययन छात्रोपयोगी तथा आकर्षक होगा, शिक्षक की लोकप्रियता बढ़ेगी ।

आशानुरूप पूर्व के संस्करण पर विभिन्न स्रोतों से सारगर्भित सुझाव प्राप्त हुए। उन सुझावों के आधार पर इस नये संस्करण को संशोधित एवं परिमार्जित कर लिया गया है। हम सुझाव देनेवालों के प्रति आभारी हैं। अब आशा है कि उपर्युक्त तथ्यों पर शिक्षकबंधु एवं सुधीजन पुन: ध्यान देंगे। यद्यपि पाठ्यपुस्तक के लिए सामग्री प्रस्तुत करने में प्रतिभागियों ने यथासाध्य परिश्रम किया है, निर्देशानुसार उन्होंने अभ्यास तथा अन्य उपयोगी सामग्री देकर इसे परिष्कृत करने का पूरा प्रयास किया है तथापि पाठ्यपुस्तक के लेखन से मुद्रण तक के विभिन्न स्तरों में जो स्खलन हुए हों उसके लिए अग्रिम क्षमा मांगने के अतिरिक्त यह अनुरोध भी करता हूँ कि अपने परामर्शों से अध्यापकबन्धु मुझे अवगत करायें तथा पुस्तक की व्यापक परिष्कृति में अपनी भागीदारी भी सुनिश्चित करें।

(प्रो.) उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

अध्यक्ष

संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

विषयानुक्रमणिका

क्र.	पाठाः		पृष्ठाङ्काः
1.	मङ्गलम्	....	1–6
2.	सङ्घे शक्तिः	....	7–21
3.	अस्माकं देशः	....	22–40
4.	प्रहेलिकाः	....	41–50
5.	सामाजिकं कार्यम्	....	51–65
6.	रघुदासस्य लोकबुद्धिः	....	66–76
7.	प्राचीनाः विश्वविद्यालयाः	....	77–89
8.	नीतिश्लोकाः	....	90–101
9.	संकल्पवीरः दशरथ माँझी	....	102–115
10.	गुरु–शिष्य–संवादः	....	116–134
11.	विज्ञानस्य उपकरणानि	....	135–148
12.	सदाचारः	....	149–161
13.	रविषष्ठी–व्रतोत्सवः	....	162–176
14.	कृषिगीतम्	....	177–184

प्रासङ्गिकं व्याकरणम् **185–226**

1.	वर्णविचारः	....	185–189
2.	सन्धिविचारः	....	190–191
3.	सर्वनाम विशेषणं क्रियाविशेषणं च	....	192–197
4.	समासस्य अवधारणा	....	198–200
5.	पत्रलेखनम् – अनुच्छेदलेखनम्	....	201–203
6.	शब्दरूपाणि	....	204–210
7.	धातुरूपाणि	....	211–224
8.	संस्कृत–सम्भाषणम्	....	225–226